॥ श्रीहरिः ॥

376▲

स्त्री-धर्मप्रश्नोत्तरी

गीताप्रेस गोरखपुर

GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

हनुमानप्रसाद पोद्दार

376

॥ श्रीहरिः ॥

स्त्री-धर्मप्रश्नोत्तरी

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

हनुमानप्रसाद पोद्दार

ॐ

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

स्त्री-धर्मप्रश्नोत्तरी

सरला—बहिन! बहुत दिनोंसे इच्छा थी कि मैं तुमसे स्त्री-धर्मके सम्बन्धमें कुछ पूछूँ। आज ईश्वरकी कृपासे यह अवसर मिला है; क्या मैं इस समय तुमसे कुछ पूछ सकती हूँ?

सावित्री—बड़ी खुशीसे। बहिन! मेरे लिये तो यह सौभाग्यकी बात है कि आज तुम्हारे कारण मुझे धर्मचर्चा करनेका सुअवसर मिलेगा और बहुत-सी भूली हुई बातें याद आ जायँगी।

सरला—अच्छा तो बहिन! पहले तो मुझे यह बतलाओ कि स्त्रियोंका मुख्य धर्म क्या है?

सावित्री—स्त्रीके लिये मुख्य धर्म केवल पतिपरायणता ही है और सारे धर्म तो गौण हैं और उनका आचरण भी केवल पतिकी प्रसन्नताके लिये ही किया जाता है।

सरला—आजकल तो लोग कहते हैं कि स्त्री और पुरुषके समान अधिकार हैं, फिर अकेली स्त्री ही पतिकी सेवा क्यों करे, पति अपनी स्त्रीकी सेवा क्यों न करे?

सावित्री—ऐसा कहनेवाले लोग आर्य महिलाओंके पतिव्रत-धर्मका महत्त्व नहीं जानते। हमारे यहाँ तो स्त्रीके लिये पति ही एकमात्र उपास्य देवता है और उसीकी सेवासे स्त्रीके सारे मनोरथ सिद्ध होते हैं।

मनुमहाराजने कहा है—

विशीलः कामवृत्तो वा गुणैर्वा परिवर्जितः।
उपचर्यः स्त्रिया साध्व्या सततं देववत् पतिः॥

(अ० ५। १५४)

साध्वी स्त्रीको शीलरहित, कामवृत्तिवाले या गुणहीन पतिकी भी सदा देवताके समान पूजा करनी चाहिये।

और भी कहा है—

बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना॥
ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना॥
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा। कायँ बचन मन पति पद प्रेमा॥
मन बच कर्म पतिहि सेवकाई। तियहि न यहि सम आन उपाई॥
अस जिय जानि करहि पतिसेवा। तापर सानुकूल सब देवा॥
आन धर्म नहिं दूसर देवा। नारि धर्म केवल पतिसेवा॥

सरला—तो क्या स्त्रियोंको और किसी प्रकारका व्रत, नियम नहीं करना चाहिये?

सावित्री—हाँ! पतिकी आज्ञा बिना कदापि न करना चाहिये। मनुमहाराजने कहा है—

नास्ति स्त्रीणां पृथग् यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषितम्।
पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते॥

(अ० ५। १५५)

स्त्रियोंको पतिके (आज्ञा) बिना अलग यज्ञ, व्रत और उपवास नहीं करना चाहिये। केवल पतिकी सेवासे ही स्त्री स्वर्गलोकमें पूजित होती है—

शास्त्रमें और भी कहा है—

पत्यौ जीवति या तु स्त्री उपवासं व्रतं चरेत्।
आयुष्यं हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छति॥

पतिके जीवित रहते जो स्त्री पतिसेवा न करके निर्जल और निराहार उपवास-व्रत करती है, वह पतिकी आयु हरती है और स्वयं नरकमें पड़ती है।

सरला—ठीक है! यह तो समझ गयी कि स्त्रीका धर्म

पतिसेवा ही है, परंतु क्या पतिका कोई धर्म नहीं है? आजकलके पति प्रायः स्वयं दुराचरण करते हुए अपनी स्त्रियोंको कष्ट दिया करते हैं, क्या उन लोगोंके लिये धर्मशास्त्रमें कोई आज्ञा नहीं है?

सावित्री—आज्ञा क्यों नहीं है; मनुमहाराजने तो स्पष्ट ही कहा है कि—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

(अ० ३।५६)

जहाँ स्त्रियोंका सत्कार किया जाता है वहाँ देवता रमते हैं और जहाँ स्त्रियोंका सत्कार नहीं होता वहाँ सर्व क्रियाएँ निष्फल होती हैं।

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥

(अ० ३।६०)

जिस कुलमें स्त्रीसे पति और पतिसे स्त्री सन्तुष्ट रहती है, उस कुलका निश्चय ही कल्याण होता है।

और भी बहुत-से प्रमाण हैं। जो पुरुष अपनी स्त्रियोंको कष्ट देते हैं, उनका यथाविधि भरण-पोषण और सत्कार नहीं करते, वे अधर्म करते हैं। आजकल बहुत-से लोग स्त्रीको 'पगकी जूती' कह देते हैं, बीमारी आदिमें चिकित्सा और सेवा-शुश्रूषादिका उचित प्रबन्ध नहीं करते, यह अन्याय है। बहुत-से लोग स्वयं दुराचारी होते हुए भी स्त्रियोंको सीता और सावित्रीके रूपमें देखना चाहते हैं। यद्यपि ऐसा होना कठिन है, तथापि यहाँ तो इस समय हम स्त्री-धर्मकी चर्चा कर रही हैं। पुरुषोंका धर्म भिन्न है। यदि पुरुष अपने धर्मका आचरण नहीं करते तो स्त्रियाँ भी अपना धर्म छोड़ दें, यह कोई अच्छी और न्यायसंगत दलील नहीं। हमारे लिये तो अपने धर्मका पालन करना ही आवश्यक है, हमारे प्रति पतिका व्यवहार

कैसा है या उसके आचरण किस प्रकारके हैं, इस बातको देखना साध्वी स्त्रीका कार्य नहीं है। स्त्रीका कर्तव्य तो केवल पतिके परायण होना ही है और मेरा तो यह भी विश्वास है कि यदि स्त्री वास्तवमें पतिपरायणा हो तो वह अपने शुद्धाचरणके बलसे कुमार्गमें पड़े हुए पतिको पुनः सन्मार्गपर ला सकती है।

सरला—समझी! परंतु क्या स्त्रीजाति ईश्वरका भजन भी न करे?

सावित्री—पगली! ईश्वरका भजन क्यों न करे। यह तो मनुष्यमात्रका स्वाभाविक धर्म होना चाहिये।

सरला—यदि पति नाराज हों तो?

सावित्री—तो क्या! ईश्वरका भजन तो निरन्तर करती ही रहे। भजन प्रधानतः मनसे हुआ करता है। मनके कार्यको कोई नहीं रोक सकता। शरीरसे पतिकी सेवा करे, घरका सारा कार्य करे और मनसे परमात्माका चिन्तन करे। इसमें पतिके नाराज होनेका हेतु ही क्या है? हाँ, कोई ढोंगसे ईश्वर-भजनका बहाना कर पतिसेवासे पिण्ड छुड़ाना चाहे तो उसपर पतिका नाराज होना अवश्य ही सम्भव है। पहले यह तो समझो कि ईश्वर क्या वस्तु है?

सरला—बहिन! मैं तो मूर्ख हूँ, तुम्हीं समझाओ।

सावित्री—अच्छा तो सुनो। जो सृष्टि करते हैं, जो सबको पैदा करते हैं, सबका पालन करते हैं और जो सबका नाश करते हैं, जिनकी दयालुता और न्यायपरायणतासे जगत्‌का सारा कार्य यथाविधि हो रहा है, जो सर्वशक्तिमान् हैं वे ही ईश्वर हैं।

सरला—वह ईश्वर कहाँ रहता है?

सावित्री—यों तो उसके लिये अनेकों लोकोंकी कल्पना है; परंतु वास्तवमें वह सभी जगह है। ऐसा कोई स्थान नहीं या ऐसा कोई पदार्थ नहीं कि जहाँ वह न हो या जिसमें वह न हो। पृथ्वी,

जल, वायु, अग्नि, आकाश, पर्वत, वृक्ष, लता, समुद्र, नदी, पशु, पक्षी, जड़, चेतन, हम और तुम सभीमें वह भरा है।

सरला—तो क्या उसका कोई खास रूप नहीं है?

सावित्री—वास्तवमें तो उसका कोई रूप नहीं और यों सभी रूप उसीके हैं।

सरला—क्या वह कभी किसी रूपमें दिखलायी भी पड़ता है?

सावित्री—यों तो नित्य ही दिखायी पड़ता है, परंतु किसी-किसी समय तो वह खासरूपसे भी दर्शन देता है। बात यह है कि लोग उसे देखना नहीं चाहते।

सरला—यदि देखना चाहें तो?

सावित्री—अवश्य देख सकते हैं, भक्त जिस रूपमें उसको देखना चाहता है, उसी रूपमें वह दर्शन देता है; परंतु प्रेम चाहिये। भक्तोंके प्रेमके कारण ही तो भगवान्ने दिव्य राम-कृष्णादिके रूपमें अवतार लिया था।

सरला—लोग तो कहते हैं कि भगवान्का कभी अवतार होता ही नहीं, क्या भगवान् भी कभी गर्भमें आते हैं और मरते हैं?

सावित्री—सत्य है। निःसन्देह भगवान् न तो कभी गर्भमें आते हैं और न कभी मरते हैं; परंतु उनका अवतार अवश्य होता है। अवतार न माननेवाले लोग भूलते हैं।

सरला—तब फिर भगवान् राम-कृष्णादिका जन्म और अवसान क्योंकर हुआ?

सावित्री—लीलामात्रसे, इतर जीवोंकी भाँति कर्मबन्धनसे नहीं। देखो, भगवान् गीतामें कहते हैं—

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया॥

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

(अ० ४।६—८)

मेरा जन्म साधारण मनुष्योंके सदृश नहीं है, मैं अविनाशीस्वरूप अजन्मा होनेपर भी तथा सब भूतप्राणियोंका ईश्वर होनेपर भी अपनी प्रकृतिको अधीन करके योगमायासे प्रकट होता हूँ।

हे अर्जुन! जब-जब धर्मकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूपको रचता हूँ अर्थात् प्रकट करता हूँ।

साधु पुरुषोंका उद्धार करनेके लिये और दूषित कर्म करनेवालोंका नाश करनेके लिये तथा धर्मस्थापन करनेके लिये (मैं) युग-युगमें प्रकट होता हूँ।

सरला—परंतु आमतौरपर तो लोग ऐसा नहीं जानते।

सावित्री—मायासे मोहित जीव समझते नहीं। यदि भगवान्‌के जन्म और उनके कर्मोंका रहस्य तत्त्वसे किसीकी समझमें आ जाय तो उसका मोक्ष हो जाता है।

गीतामें भगवान्‌ने कहा है—

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥

(अ० ४।९)

मेरा वह जन्म और कर्म अलौकिक है, इस प्रकार जो पुरुष तत्त्वसे जानता है वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको नहीं प्राप्त होता, किंतु मुझे ही प्राप्त होता है।

सरला—जीव किसे कहते हैं?

सावित्री—मायासे अलग दीखनेवाली परमात्माकी सनातन-शक्तिको ही जीव कहते हैं।

सरला—तो क्या जीवात्मा और परमात्मामें कोई अन्तर नहीं?

सावित्री—वास्तवमें तो कोई अन्तर नहीं; परंतु जीव जबतक भूलसे अन्तर मानता है, तबतक अवश्य ही अन्तर है। इसी अन्तरके मिट जानेका नाम मोक्ष है। इसीको भगवत्प्राप्ति कहते हैं।

सरला—क्या स्त्रियोंको भी भगवत्-प्राप्ति हो सकती है?

सावित्री—क्यों नहीं। अरी, वहाँ स्त्री-पुरुषका भेद कैसा, तुमने नहीं सुना कि—

जाति पाँति पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई॥

भगवान्ने गीतामें कहा है—

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्॥

(अ० ९।३२)

हे अर्जुन! स्त्री, वैश्य और शूद्रादि तथा पापयोनिवाले जो भी हों, वे भी मेरी शरण होकर तो परमगतिको ही प्राप्त होते हैं। गोसाईं तुलसीदासजीने भी कहा है—

पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ।
सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ॥

सरला—अच्छा मोक्षसे क्या होता है?

सावित्री—जीव नित्यस्वरूप परमात्मामें सदाके लिये मिल जाता है और उस असीम तथा अखण्ड आनन्दमें मिलकर स्वयं आनन्दस्वरूप हो जाता है। दूसरे शब्दोंमें उसको फिर संसारमें आना-जाना नहीं पड़ता।

सरला—उस परमात्माका कोई खास नाम भी है?

सावित्री—उसका कोई नाम नहीं और सभी नाम उसके हैं। अनन्त नाम हैं। जिनमें वेदोंमें ॐ को प्रधान बतलाया है और अन्यान्य शास्त्रोंमें श्रीराम, कृष्ण, हरि और नारायण आदि भिन्न-भिन्न अनेक नामोंको।

सरला—वेद किसको कहते हैं?

सावित्री—वेद अपौरुषेय हैं और वे चार हैं। यथा—ऋक्, यजुः, साम और अथर्व।

सरला—अच्छा, तो अब परमात्माकी प्राप्तिके सहज साधन बतलाओ।

सावित्री—सत्संग करना, परमात्माके नामका जप करना, निरन्तर उसका चिन्तन करना, उसीका ध्यान करना, उसीकी प्रीतिके लिये सारे कर्मोंका आचरण करना और उसीके प्रेममें मग्न होकर संसारको एवं अपने-आपको भूल जाना। यही उसके मिलनेका उपाय है।

सरला—नाम कौन-सा जपना चाहिये और ध्यान किस तरह करना चाहिये?

सावित्री—श्रीराम, कृष्ण, हरि आदि कोई-सा भी नाम जो अपनेको प्रिय लगे वही जपना चाहिये। इसी प्रकार ध्यान* भी श्रीविष्णु, कृष्ण, राम और शिव आदि किसी साकार स्वरूपका अथवा बर्फमें जलके समान सर्वव्यापी निराकार परमात्माका करना चाहिये।

सरला—नित्य प्रातःकाल भगवान्‌की प्रार्थना किस प्रकार करनी चाहिये?

---

* गीताप्रेसकी 'श्रीप्रेमभक्तिप्रकाश', 'मनको वश करनेके कुछ उपाय', 'सच्चा सुख और उसकी प्राप्तिके उपाय', 'भगवान् क्या है?', 'प्रबोधसुधाकर' आदि पुस्तकोंमें ध्यानकी बातें लिखी हैं।

सावित्री—प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिये कि हे परमपिता जगदीश्वर! हे सर्वान्तर्यामी दयामय परमात्मन्! आपको कोटि-कोटि नमस्कार है। मुझसे मन, वाणी, शरीर और इन्द्रियोंद्वारा जो कुछ अपराध हुए हैं उन सबको आप क्षमा कीजिये। मुझे ऐसा बल दीजिये कि जिससे मेरी सारी पापवासना नष्ट हो जाय, वाणीसे निरन्तर आपका गुण-गान हो, शरीरसे निरन्तर आपकी सेवा हो, मनसे निरन्तर आपका चिन्तन हो। सारे जगत्में केवल आपहीकी मनोमोहिनी छवि देख पड़े और मेरा चित्त कमलमें भ्रमरकी भाँति सर्वदा उसीमें आसक्त रहे। हे प्रभो! मैं दीन हूँ, आप दीनबन्धु हैं इसी नाते मुझे सँभालिये। जैसे दीन बालकोंको केवल माता-पिताका ही सहारा होता है, उसी प्रकार मुझे भी केवल आपका ही सहारा है। हे नाथ! मेरे तो—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

सरला—ऐसी प्रार्थनासे क्या होता है?

सावित्री—यदि प्रार्थना सच्चे मनसे और निष्कपट-भावसे हो तो इससे परमात्माकी भक्ति प्राप्त होती है और उससे इस लोकमें सुख होता है और अन्तमें बन्धन छूटकर परमात्माकी प्राप्ति हो जाती है।

सरला—ईश्वर कितने हैं?

सावित्री—केवल एक ही।

सरला—अन्यान्य देवता क्या ईश्वर नहीं हैं?

सावित्री—नहीं।

सरला—फिर लोग उन्हें क्यों पूजते हैं?

सावित्री—शास्त्रोंमें उन्हें पूज्य माना है और परमात्माकी आज्ञा मानकर परमात्माकी प्रसन्नताके लिये देवपूजन करनेमें

कोई दोष भी नहीं है। जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पतिको प्रसन्न करनेके लिये पतिकी आज्ञासे दूसरे पुरुषोंकी सेवा करती है, उसी प्रकार यह देवपूजा भी है।

सरला—आजकल स्त्रियाँ जो अनेक पीर-पैगम्बर, लकड़हा, चिथड़हा, बाघोबा, मालासी, रिगतिया और मावली आदि अनेक देवी-देवताओंकी पूजा करती हैं वह सब भी तो इसी देवपूजामें है!

सावित्री—तुम समझी नहीं, देवता तो उनको कहते हैं कि जिनका शास्त्रोंमें वर्णन है, तुमने जो नाम बतलाये हैं उनमेंसे कोई भी देवता नहीं है। मुसलमानोंके पीर-पैगम्बरोंको मानना तो महान् अधर्म और पापकार्य है। हिन्दुओंके इतने देवी-देवताओंके रहते हिन्दूधर्मका नाश करनेवाले मुसलमानोंके पीर-पैगम्बरोंको मानना, उनकी पूजा करना, मानना, बोलना, कब्रोंको पूजना, ताजियोंके नीचेसे निकलना और बालकोंको निकलवाना, छोटे-छोटे बच्चोंपर मुसलमानोंके मुँहसे थुकवाना, उनकी कब्रोंपर फूल, पैसे और बतासे चढ़ाना और फिर उनका जूठन प्रसाद मानकर लेना तो एक प्रकारसे हिन्दूधर्मपर आघात करना है। अतएव इनकी पूजा तो सर्वथा त्याज्य है, परंतु उन लकड़हा और मालासी आदिकी पूजा भी धर्मसंगत नहीं। उनकी पूजा भी एक तामसी कार्य है और प्रेतोपासना है और इस प्रकारकी पूजाका फल क्या होता है, इसके लिये गीतामें कहे हुए भगवान्‌के वचनोंपर ध्यान दो—

यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्॥

(९।२५)

देवताओंको पूजनेवाले देवताओंको प्राप्त होते हैं, पितरोंको पूजनेवाले पितरोंको प्राप्त होते हैं, भूतोंको पूजनेवाले भूतोंको प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं।

सरला—तो क्या इनकी पूजा नहीं करनी चाहिये? क्या इनकी पूजासे कोई कामना सिद्ध नहीं होती?

सावित्री—उत्तम गति चाहनेवालोंको तो इनकी पूजा कभी नहीं करनी चाहिये। मेरी समझसे तो इनकी पूजासे कोई कामना भी सिद्ध नहीं होती और यदि होती भी हो तो भी इनकी पूजा एक तामस कार्य होनेसे नीच गति पानेका कारण हो सकती है। इस दृष्टिसे भी इनकी पूजा त्याज्य है। वास्तवमें ये बनावटी देवता हैं। मूर्ख स्त्रियोंसे धन छीननेके लिये धूर्तोंने यह जाल रचा है, जिसमें भोली-भाली स्त्रियोंको फाँसकर लोग धन हरण करते हैं। इसीलिये भूलकर भी ऐसे लोगोंके धोखेमें नहीं आना चाहिये। ऐसे लोग बेचारी स्त्रियोंको बड़ी बुरी तरहसे ठगते हैं। किसी-किसी समय तो ऐसा बर्ताव देखा जाता है कि जिसका रूप व्यभिचार, खून और चोरी आदि होता है।

शास्त्रोक्त देवताओंके पूजनेसे यद्यपि कामनाकी सिद्धि होना माना है, परंतु उनकी पूजा भी कामनाकी सिद्धिके लिये नहीं करनी चाहिये।

सरला—मन्त्र, यन्त्र, ताबीज, गण्डे और तागे आदिसे तो कार्य सिद्ध होता है न?

सावित्री—किसी अंशमें मन्त्रशास्त्र सत्य हो सकता है। परंतु पैसेके लिये मन्त्र-यन्त्र बतलानेवाले तो प्राय: धूर्त ही हुआ करते हैं, जो दूसरोंको धन, पुत्रादि देकर उनका मनोरथ सिद्ध कर सकते हों, वे स्वयं दो-दो, चार-चार पैसोंके लिये क्यों भटकें; अतएव ऐसे लोगोंसे बचना ही चाहिये।

सरला—यह सब बातें तुम्हें कैसे मालूम हुईं बहिन?

सावित्री—मैंने विद्या पढ़ी है जिससे मुझे अनेक बातोंका ज्ञान हो गया है।

सरला—विद्या पढ़ना तो स्त्रियोंके लिये सदासे बुरी बात है, क्या तुम यह नहीं मानतीं?

सावित्री—कौन कहता है कि सदासे बुरी बात है? हमारे यहाँ तो गार्गी, मैत्रेयी और मदालसा-जैसी महान् विदुषियाँ हो गयी हैं। हाँ, कुछ समयसे स्त्रियोंमें विद्याका अभाव हो गया था। वास्तवमें विद्या पढ़नेमें कोई दोष नहीं। स्त्रियोंको तो अवश्य ही शिक्षिता होना चाहिये।

सरला—लोग कहते हैं कि स्त्रियाँ पढ़नेसे विधवा हो जाती हैं?

सावित्री—यह मिथ्या भ्रम है। विद्यासे विधवा होतीं तो जिन जातियोंमें स्त्रीशिक्षाका प्रचार है, उन जातियोंकी सभी स्त्रियाँ विधवा होतीं। यह तो वैसी ही मूर्खताकी बात है कि जैसे कुसंस्कारके वशमें होकर लोग कह दिया करते हैं कि हमारे घरमें अमुकने जनेऊ (यज्ञोपवीत) ली थी और वह मर गया था, इसीलिये हम नहीं लेते।

सरला—कहते हैं कि विद्या पढ़कर स्त्रियाँ व्यभिचारिणी हो जाती हैं।

सावित्री—नहीं! नहीं!! विद्यासे व्यभिचारिणी क्यों होने लगीं! विद्या तो धर्मको जाग्रत् करती है, विद्यासे धर्मका स्वरूप मालूम होता है। गृहकार्यमें चतुरता बढ़ती है, धर्मपुस्तकोंके अध्ययनसे विचारशक्ति बढ़ती है, ज्ञानकी वृद्धि होती है और संकटके समय उससे पार पानेका मार्ग मिल जाता है,धैर्यका प्रकाश होता है, कुकर्मोंके त्यागमें और सत्कार्योंके करनेमें रुचि होती है, जिससे सब ओरसे कल्याण होता है। विद्यासे गृहस्थाश्रम स्वर्गका नन्दन वन-सा सुखमय बन जाता है। लोक और परलोक दोनों सुधर जाते हैं। भगवती सीताजी परम विदुषी और

पतिव्रता थीं। इसी कारण वे रावणकी सोनेकी लंकाको लात मारकर भगवान् श्रीरामचन्द्रके चरणोंके ध्यानमें निमग्न रह सकीं। महारानी दमयन्तीने विद्या-कौशलसे ही अपने बिछुड़े हुए पतिका पता लगा लिया। सती सावित्रीने अपने अद्‌भुत सतीत्व और विद्याके बलसे ही यमराजको वचनोंसे जीतकर पतिकी आत्माको यम-सदनसे वापस लौटा लिया; फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि विद्यासे व्यभिचार होता है। व्यभिचार होता है अविद्यासे, कुलटा स्त्रियोंके संगसे, घर-घर भटकनेसे, विषयादिकी बातें अधिक सुननेसे, अधर्मसे होनेवाले दुःखोंको न जाननेसे, पतिके साथ कलह करनेसे और पर-पुरुषोंके साथ प्रीति करनेसे। इसमें विद्याका कोई दोष नहीं। हाँ, इतना अवश्य होना चाहिये कि स्त्रियोंको जो विद्या पढ़ायी जाय, उन्हें जो कुछ सिखाया जाय सो धर्मके अनुकूल और हिन्दू-आदर्शके अनुसार अवश्य हो।

सरला—वह शिक्षा कैसी होनी चाहिये?

सावित्री—साधारणतः वह शिक्षा ऐसी होनी चाहिये कि जिससे बालिकाओंमें रामायण, गीता, मनुस्मृति और महाभारतादि धार्मिक और नैतिक ग्रन्थोंके समझनेकी शक्ति पैदा हो जाय। साथ ही घरके काम-काजमें वे चतुर हो जायँ। सीना-पिरोना, कातना और बालकोंकी रक्षा करना आदि कार्य सीख लें और सब प्रकारसे पतिका अनुगमन कर सकें।

सरला—आजकल जो शिक्षा दी जाती है, वह क्या ऐसी ही है?

सावित्री—नहीं! उसमें बहुत-सी त्रुटियाँ हैं, कन्याओंके लिये जो बड़े-बड़े विद्यालय हैं, उनमें तो प्रायः अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी सभ्यताका समावेश हो गया है, जिनसे हमारा हिन्दू-आदर्श नष्ट हो रहा है। फैशन बढ़ रहा है, विलासिताकी तरफ

झुकाव हो रहा है, घरके काम-काजसे अरुचि और घृणा होने लगी है, फजूलखर्ची बढ़ रही और केवल अपने शरीरके सुख और आरामके लिये शरीरको धोने-पोंछने और सजाने आदिमें ही प्रायः समय जाने लगा है। धर्मका भाव,धीरे-धीरे परंतु प्रबलताके साथ घट रहा है। हिन्दू-जातिकी स्त्रियोंके लिये ऐसी शिक्षा कभी वांछनीय नहीं। अतएव इस शिक्षाप्रणालीका सुधार होना चाहिये। ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये कि जिससे हिन्दू-बालिका आदर्श हिन्दू-ललना बन सकें, जिससे वे धर्ममें रुचि, सदाचारमें प्रेम, पतिमें भक्ति, बड़ोंमें आदर, दीनोंके प्रति करुणा, जगत्के प्रति सेवाभाव, गृहस्थके कार्योंमें उत्साह, विलासितासे घृणा, मितव्ययिताका अभ्यास और ईश्वरमें श्रद्धा आदि गुणोंको पूरी तौरसे प्राप्त कर सकें।

सरला—छोटी-छोटी पाठशालाओंमें तो अंग्रेजी नहीं पढ़ाई जाती ?

सावित्री—अंग्रेजी नहीं पढ़ाई जाती तो क्या हुआ ? अंग्रेजी-भाव तो प्रायः रहते हैं। अंग्रेजी भाषासे मेरा द्वेष थोड़े ही है, मैं केवल यही चाहती हूँ कि हिन्दू स्त्रियाँ अपने हिन्दूपनकी रक्षा कर सकें, ऐसी शिक्षा उन्हें दी जानी चाहिये। पाठशालाओंमें भी प्रायः और बहुत-सी त्रुटियाँ हैं। जैसे उत्तम अध्यापिकाओंका अभाव, गृहकार्योंका न सिखाना और धर्म-शिक्षाका न होना इत्यादि। आरम्भसे ही माता-पिताको या अभिभावकोंको कन्याकी शिक्षाका उचित प्रबन्ध करना चाहिये और स्वयं अपने आचरणोंसे उनको ऐसी शिक्षा देनी चाहिये कि जिससे उनके भी वैसे ही आचरण हो जायँ। बाल्यकालमें तो कन्या अपने माता-पिताके अधीन रहती है, इससे उन्हींके आचरणोंका कन्यापर विशेष प्रभाव पड़ता है।

सरला—क्या कन्याको माता-पिताके अधीन रहना आवश्यक है?

सावित्री—आवश्यक ही नहीं, धर्म है। हमारे शास्त्रोंके अनुसार तो किसी भी अवस्थामें स्त्री-जातिको स्वतन्त्र नहीं होना चाहिये। मनुमहाराजने कहा है—

बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता।
न स्वातन्त्र्येण कर्तव्यं किंचित्कार्यं गृहेष्वपि॥
बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने।
पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत् स्त्री स्वतन्त्रताम्॥

(अ० ५।१४७-१४८)

बालिका, युवती और बूढ़ी स्त्रीको भी घरमें कार्य स्वतन्त्र होकर नहीं करना चाहिये।

बाल्यावस्थामें पिताके वशमें, यौवन-अवस्थामें पतिके वशमें और पतिकी मृत्युके बाद पुत्रोंके वशमें रहे, पर स्वतन्त्र न रहे।

सरला—कन्याओंका विवाह कब होना चाहिये?

सावित्री—बारह वर्षसे कम उम्रकी लड़कियोंका विवाह तो कभी नहीं होना चाहिये। आवश्यक मालूम हो या योग्य वर न मिले तो और भी साल-दो सालके बाद विवाह करनेमें कोई आपत्ति नहीं है।

सरला—बारह वर्षसे कम उम्रकी लड़कियोंका विवाह क्यों नहीं करना चाहिये? इसमें क्या हानि है?

सावित्री—बहुत-सी हानियाँ हैं। स्त्री-जातिमें रोग बढ़ता है। स्त्रियाँ कम उम्रमें ही मर जाती हैं। उनके सन्तान या तो होती ही नहीं और यदि होती है तो बलहीन और अल्पायु होती है। इसके सिवा बाल-विवाहसे वैधव्यकी भी अधिक आशंका है।

सरला—बाल-विवाह तो शास्त्रसम्मत है न?

सावित्री—नहीं! सावित्री, रुक्मिणी और दमयन्ती आदिने अपने-अपने पतियोंको स्वयं चुना था, यदि वे नितान्त बालिका होतीं तो ऐसा नहीं कर सकतीं।

सरला—स्त्रियोंको तीर्थोंमें, मन्दिरोंमें और मेलोंमें जाना चाहिये। या नहीं?

सावित्री—मेलोंमें तो नहीं जाना चाहिये, परंतु तीर्थों और मन्दिरोंमें पतिकी आज्ञासे पतिके साथ जानेमें कोई आपत्ति नहीं। तीर्थ इसीलिये उत्तम हैं कि उनमें तपस्वी और ज्ञानी-महात्मालोग रहा करते थे और वे अपने पास बैठनेवालोंको ऐसा उपदेश दिया करते थे कि जिसको पाकर सुननेवाले संसार-सागरसे तर जाते थे। यही दशा मन्दिरोंकी थी। मन्दिरोंमें भगवान्‌की मूर्तिका दर्शनकर और भक्ति-विह्वल पुजारियोंके उपदेश पाकर लोग पापोंसे छूटते थे, परंतु आज प्राय: इससे विपरीत दशा है, तीर्थोंमें चोर, लम्पट, व्यभिचारी और लालचियोंके सिवा ज्ञानी-महात्मा बहुत कम देखनेमें आते हैं, मन्दिरोंमें कइयोंकी दशा अभीतक बड़ी अच्छी है और उनमें जाना कल्याणका कारण है, परंतु अधिकांश स्थलोंमें कई प्रकारकी कुत्सित कार्यवाहियाँ सुनी जाती हैं। अतएव स्त्रियोंको अकेले कहीं नहीं जाना चाहिये। वास्तवमें पतिसे बढ़कर स्त्रीके लिये कोई देवता नहीं और पतिका चरणोदक ही उसके लिये परमपावन तीर्थजल है। अतएव नित्य पतिके चरणोंमें प्रणाम करना और पतिका चरणोदक लेना ही स्त्रीका कर्तव्य है। यदि कभी पतिके साथ कहीं जानेका काम भी पड़े तो बड़ी सावधानीसे जाना चाहिये। आजकल चोर, लुच्चों और उचक्कोंकी भरमार है। कम-से-कम बहुमूल्य कपड़े और गहने पहनकर तो कभी बाहर जाना उचित नहीं है।

सरला—क्या इसमें कोई दोष है?

सावित्री—पहली बात तो यह है कि स्त्रियोंके गहने-कपड़ेका सौन्दर्य केवल अपने पतिकी प्रसन्नताके लिये है, लोगोंको दिखानेके लिये नहीं। जो स्त्रियाँ घरमें तो मैली-कुचैली साड़ी पहने बुरा वेष बनाये रखती हैं और बाहर निकलनेके समय गहनों-कपड़ोंसे बन-ठनकर निकलती हैं, वे बड़ी भूल करती हैं। यह तो एक प्रधान दोष है, दूसरे चोर-उचक्कोंका भय रहता है। तीसरे अन्यान्य स्त्रियोंकी देखा-देखी गहने-कपड़ेकी लालसा दिन-पर-दिन बढ़ती जाती है, जिससे आगे चलकर घरमें कलह होने लगता है। इसी गहने-कपड़ेके कारण झगड़ेका सूत्रपात होता है और बढ़ते-बढ़ते अन्तमें वह इतना भीषण रूप धारण कर लेता है कि जिससे सारे घरमें कलहकी अग्नि भड़क उठती है। घरभरमें परस्पर मनोमालिन्य हो जाता है। भाई-भाई और पिता-पुत्रमें अलग-अलग होनेकी नौबत आ जाती है और इसी प्रकार होते-होते अन्तमें घर बरबाद हो जाता है।

सरला—क्या गहने-कपड़े पहनकर बाहर जानेसे ही लालसा बढ़ती है, घरमें पहननेसे नहीं बढ़ती है?

सावित्री—घरमें भी बढ़ती है परंतु बाहर अधिक बढ़ती है। बाहर तो दिखानेका भाव रहता है। यदि किसी दूसरी स्त्रीसे अपने गहने-कपड़े किसी तरह कम सुन्दर मालूम होते हैं तो मनमें यह इच्छा होती है कि मैं भी ऐसे ही बनवाऊँ, पर यदि वह बाहर जाते समय गहनों और बहुमूल्य कपड़ोंके पहननेकी आदत ही छोड़ दे तो फिर दूसरी स्त्रियोंको इस दृष्टिसे देखना आप-से-आप बंद हो जाय।

सरला—यह तो ठीक है, परंतु घरमें तो वह चाहे जितने गहने-कपड़े पहने और पतिसे कहकर चाहे जितने गहने-कपड़े बनवावे, इसमें तो कोई आपत्ति नहीं है न?

सावित्री—आपत्ति क्यों नहीं है, गहने-कपड़ेकी अधिक सजावटसे विलासिता बढ़ती है, घरका काम-काज प्राय: छूट जाता है। बार-बार पतिसे माँगनेमें प्रेम घटता है। स्त्रीको तो पतिकी अनुरागिणी ही रहनी चाहिये, पतिका कर्तव्य है कि वह अपनी स्थितिके अनुसार स्त्रीको गहने-कपड़े अवश्य बनवा दे, यदि केवल कंजूसीसे वह गहने-कपड़े नहीं बनवाता है तो यह उसकी भूल है, परंतु यह कर्तव्य पतिका है, इसे पति ही सोचे, स्त्रीको तो प्रसन्न मनसे वही बात स्वीकार कर लेनी चाहिये कि जिस बातमें पति प्रसन्न हो। यदि पतिकी आर्थिक अवस्था अधिक गहने-कपड़े बनवानेकी न हो और स्त्री रोज-रोज तकाजा करती रहे तो इसका पतिके मनपर बहुत बुरा असर हो सकता है। अतएव स्त्रीको गहने-कपड़ोंके लिये पतिसे कभी अनुचित ताकीद नहीं करनी चाहिये। अपनी आवश्यकता नम्रतासे जता देनेमें कोई विशेष हानि नहीं। यह भी न करे तो और भी उत्तम है।

सरला—अच्छा, यह तो हुआ। अब तुमने जो गौण धर्मकी बात पहले कही थी और यह कहा था कि उनका आचरण भी केवल पतिकी प्रसन्नताके लिये ही किया जाता है सो वे धर्म कौनसे हैं, यह मुझे बतलाओ?

सावित्री—सुनो, मैं संक्षेपसे कहती हूँ। घरको बुहारना-झाड़ना, लीपना-पोतना, घरकी सामग्रियोंको साफ रखना, उनको यथोचित स्थानोंमें रखना, आमदनीसे कम खर्च करना, खर्चका हिसाब रखना, स्वास्थ्य-रक्षाके नियमोंका जानना और पालना, बच्चोंका पालन करना, उन्हें अपने आचरणोंसे और विद्यासे शिक्षा देना, घरका सारा काम अपने हाथोंसे करना, सारे सगे-सम्बन्धियोंको जानना, उनसे यथायोग्य बर्ताव करना, आलस्य न

करना, धर्मको जानना, धर्मकार्योंमें उत्साही रहना, दानशील होना, स्वयं वस्त्राभूषणोंसे भूषित होकर विनयसे, इन्द्रियदमनसे, मधुर वाणीसे और प्रेमसे पतिकी सेवा करना, पतिको सन्तुष्ट रखना, जो कुछ प्राप्त हो उसीमें सन्तोष करना, भोगकी वस्तुओंके लिये लाओ-लाओ न करना, मधुर वचन बोलना, सावधान और शुद्ध रहना, पतिके सारे कुटुम्बियोंसे, उसके मित्रों तथा बान्धवोंसे यथायोग्य प्रीतिका बर्ताव करना और इन सारे कार्योंमें केवल एक उद्देश्य रखना कि इनसे मेरे पतिको प्रसन्नता हो, पतिका यश, कीर्ति, वैभव, सुख और धर्म बढ़े, पतिको भगवद्भक्ति प्राप्त हो और अन्तमें भगवत्-प्राप्ति हो!

सरला—इन धर्मोंके पालनसे क्या होगा?

सावित्री—यदि निष्कामभावसे धर्मोंका पालन हो तो परमात्माकी प्राप्ति और सकामभावसे हो तो लोकान्तरमें पतिदेवताके साथ अलौकिक सुखोंकी प्राप्ति हो सकती है। श्रीमद्भागवतमें लिखा है कि जो स्त्री लक्ष्मीके समान पतिपरायणा होकर अनन्यभावसे हरिकी भावनासे पतिकी सेवा करती है, वह वैकुण्ठधाममें हरिस्वरूप पतिके साथ लक्ष्मीके समान आनन्दको प्राप्त होती है। (७। ११। २९)

मनुमहाराजने कहा है—

अनेन नारीवृत्तेन मनोवाग्देहसंयता।
इहाग्र्यां कीर्तिमाप्नोति पतिलोकं परत्र च॥

(अ० ५। १६६)

इस प्रकार जो स्त्री मन, वाणी और शरीरको वशमें रखकर नारीधर्मसे अपना जीवन बिताती है; वह इस लोकमें परम कीर्तिलाभ कर परलोकमें पतिलोकको जाती है।

सरला—यह तो सधवा स्त्रियोंके धर्म हुए। अब उन स्त्रियोंके धर्म बतलाओ कि जिनके पतियोंका देहान्त हो चुका है?

सावित्री—विधवाओंका धर्म बड़ा ही कठिन है, किंतु वह है परम पवित्र। जिस प्रकार आश्रम-धर्ममें संन्यास सबका पूज्य है, उसी प्रकार स्त्रीधर्ममें भी विधवाधर्म सर्वपूज्य है। हिन्दूजातिकी वे आदरणीया विधवाएँ जो भोगविलासकी सारी सामग्रियोंको तृणवत् त्यागकर परमात्माके चरणोंमें चित्त लगाती हुई अपने दुःखमय जीवनको जिस पवित्रताके साथ सुखमय बनाकर बिताती हैं—अपने अद्भुत त्यागसे जो हिन्दूजातिका मस्तक ऊँचा करती हैं, वे विधवाएँ यदि पूज्य न हों तो दूसरा कौन हो सकता है? आजकल जो कहीं-कहीं विधवाधर्मके पालनमें विपरीत भाव देखा जाता है, उसका कारण धार्मिक शिक्षाका अभाव, मूर्खतावश विधवाओंके प्रति असद्व्यवहार और अधिकांशमें पुरुषजातिकी नीच वृत्तियाँ हैं। यदि विधवाओंको धार्मिक शिक्षा मिली हुई हो, उनके साथ उत्तम व्यवहार हो और पुरुषजाति अपनी नीच वृत्तियोंका दमन कर ले तो विधवाधर्म फिर हिन्दूजातिके गौरवका कारण बन सकता है। विधवाओंके धर्मपालनमें बालविवाह और वृद्धविवाह भी बड़े भारी बाधक हैं। यदि माताएँ अपने लड़कोंका विवाह कम-से-कम १८ सालसे कम उम्रमें न करें और अपनी लड़कियोंका विवाह १८ सालसे कम उम्रके लड़कोंके साथ और अधिक-से-अधिक ३५ सालसे अधिक उम्रवालोंके साथ न करें तो बच्चोंके कल्याणके साथ ही विधवाओंकी बढ़ती हुई संख्यामें भी बहुत कुछ कमी हो सकती है और इससे विधवाधर्मके पालनमें सहायता मिल सकती है। अस्तु! अब मैं विधवाओंके धर्म बतलाती हूँ, जिनको तुम ध्यान देकर सुनो।

१—सती हो जाय। आजकल राज्यके कानूनके अनुसार सती होना नियमविरुद्ध है और वास्तवमें जबरदस्ती पतिकी लाशके साथ जल मरनेका नाम ही सती होना नहीं है। अपने मनको मारकर और पतिके चरणोंमें चित्त लगाकर पतिके भी पति परमात्माका भजन

करना ही यथार्थ सती होना है। इसीलिये विधवाओंको चाहिये कि मनको जीतकर एकमात्र परमात्माको ही अपना पति मानकर प्रेमपूर्वक उसीका भजन करें—यही सती होना है।

२—अपना समय परमात्माकी आराधनामें लगावे, संसारके सुखभोगोंसे मनको हटा ले, गीता और रामायणादि ज्ञान, वैराग्य, भक्तिको उत्पन्न करनेवाले ग्रन्थोंका विचार करे, सदा साधु-स्वभाव रहे।

३—उत्सव और मंगलादि कार्योंमें शामिल न हो*। सधवा और युवती स्त्रियोंकी बातें न देखे और न सुने; आभूषण और शृंगार त्याग दे; बाल सँवारना, पान खाना और सुगन्धित पदार्थोंका सेवन करना छोड़ दे।

४—जहाँतक हो सके, धरतीपर सोवे, कोमल बिछौना न बिछावे, एक समय भोजन करे, उत्तेजक पदार्थ न खाय, महीन, रेशमी और फैशनवाले वस्त्रोंको त्याग दे; जहाँतक हो सके पवित्र, मोटे हाथसे बुने हुए देशी वस्त्र काममें लावे; यथासाध्य रंगीन वस्त्र न बरते।

५—आठ प्रकारके मैथुनोंका सर्वथा त्याग कर दे।

६—निर्जल और निराहारव्रत करे। स्वादिष्ट और बलकारक भोजन जान-बूझकर कभी न करे।

७—निकम्मी कभी न रहे, चक्की पीसना और चरखा कातना आदि शरीरको न बढ़ानेवाले कार्य करती रहे, घरके और सारे कार्य भी यथासाध्य अपने हाथोंसे ही करे।

---

* इसलिये नहीं कि उनमें शामिल होनेसे वे काम बिगड़ जावेंगे। जैसे कि भूलसे बहुत-से लोग मान बैठते हैं कि विवाहके समय, यात्राके समय, विधवाको देखनेसे पाप होता है। भला पवित्रात्मा विधवाके दर्शनसे पाप होगा तो पुण्य किसके दर्शनसे होगा? ऐसा भ्रम छोड़कर विधवाओंसे घृणाका भाव हटा देना चाहिये और उनमें आदरबुद्धि करनी चाहिये। उनको उत्सवादिमें शामिल होना इसलिये वर्जित है कि वहाँकी चमक-दमक और विषय-बाहुल्यसे कहीं विधवाके मनमें कोई विकार न हो जाय।

८—धर्म और नीतिके उपदेश सुने और सुनावे; कुसंग सर्वथा त्याग दे।

९—सास, श्वशुर, जेठ, देवर, पिता, माता, भाई या अन्य अपने रक्षकके (जो कि दूषित आचरणोंवाला न हो) अधीन रहे; रक्षककी आज्ञा बिना कुछ भी न करे।

१०—बकवाद और हठ न करे, क्रोध न करे, दीन होकर सन्तोषसे रहे, धर्ममें निष्ठा रखे और चित्तको कभी चंचल न होने दे।

११—युवती स्त्रियोंमें न बैठे; सदा बड़ी-बूढ़ियोंके तथा धर्मका आचरण करनेवाली स्त्रियोंके पास बैठे; बुरे आचरणवाली स्त्रियोंके पास बैठना तो दूर रहा, वरन् जहाँतक हो सके उनके दर्शन भी न करे।

१२—यदि अपने पास पैसे हों तो उन्हें गरीब और अनाथ बच्चे तथा विधवाओंकी सहायतामें लगावे, पैसे न हों तो शारीरिक परिश्रमसे जो कुछ आमदनी हो उसीमें अपना निर्वाह करे, जहाँतक हो सके किसीसे कुछ भी न माँगे।

विधवाओंके सम्बन्धमें मनुमहाराजके ये वचन हैं—

कामं तु क्षपयेद्देहं पुष्पमूलफलैः शुभैः।
न तु नामापि गृह्णीयात् पत्यौ प्रेते परस्य तु॥
आसीतामरणात्क्षान्ता नियता ब्रह्मचारिणी।
यो धर्म एकपत्नीनां काङ्क्षन्ती तमनुत्तमम्॥
मृते भर्तरि साध्वी स्त्री ब्रह्मचर्ये व्यवस्थिता।
स्वर्गं गच्छत्यपुत्रापि यथा ते ब्रह्मचारिणः॥
अपत्यलोभाद् या तु स्त्री भर्तारमतिवर्तते।
सेह निन्दामवाप्नोति पतिलोकाच्च हीयते॥

(अ० ५। १५७-१५८, १६०-१६१)

पवित्र पुष्प, मूल-फलों (के भोजन) से अपनी देहको चाहे निर्बल कर दे, परंतु पतिके मरनेपर दूसरोंका नाम भी न ले।

पतिव्रता स्त्रियोंके सर्वोत्तम धर्मको चाहनेवाली विधवा स्त्री मरणपर्यन्त क्षमायुक्त नियमपूर्वक ब्रह्मचर्यसे रहे।

अपुत्रा होनेपर भी पतिव्रता स्त्री स्वामीकी मृत्युके बाद केवल ब्रह्मचर्यके बलसे स्वर्गको जाती है।

जो स्त्री सन्तानके लोभसे पतिका अतिक्रमण करती है, वह इस लोकमें निन्दा पाती है और परलोकसे भी भ्रष्ट हो जाती है।

सरला—बहिन! अब मुझे तुम कुछ चुने हुए ऐसे नियम बतला दो जिनके पालनसे स्त्रियोंके सारे धर्मोंका पालन हो जाय।

सावित्री—बड़ी अच्छी बात है। लो तो ध्यान देकर सुनो और जहाँतक बन पड़े इन नियमोंको याद रखो, स्वयं काममें लाओ तथा औरोंमें प्रचार करो।

१—यदि संसार तथा स्वर्गका सुख और मुक्तिका परम सुख प्राप्त करना चाहती हो तो तन, मन और वाणीसे अपने पतिकी सेवा और आज्ञामें रहो। तनसे जिस प्रकार बने पतिको सुख पहुँचाओ; मनसे कपट छोड़कर पूर्ण प्रेम करो, पति यदि तुमसे प्रेम न भी करे तो भी तुम अपनी तरफसे प्रेममें कमी मत होने दो; वाणीसे निरन्तर मृदु, मधुर, प्रिय, प्रेमभरे, क्रोधरहित और आदरसूचक शब्दोंका प्रयोग करो। यदि पति क्रोध भी करे तो भी तुम अपने शब्दोंको वैसा ही रखो।

२—जो काम पतिकी इच्छाके विरुद्ध हो उसको कभी न करो, चाहे वह काम तुमको कितना ही प्यारा क्यों न हो। पतिकी जैसी इच्छा देखो वैसा ही बरतो। जहाँ पति कहे, वहीं बैठो; जब कहे, तभी उठो; जो कहे, सो ही करो; अपने मनसे किसी भी दूसरी बातको बनाकर पतिकी इच्छाको न बिगाड़ो।

३—हर हालतमें प्रसन्न रहो और पतिको प्रसन्न रखो। जिस कार्यसे पतिको प्रसन्नता और सुख हो वही कार्य करो।

४—पति कैसा ही रोगी, कुकर्मी और दुराचारी हो तुम तो उसे ईश्वरके समान जानो और नित्य उसकी दासी बनी रहो। बीमार हो तो तन, मन, धनसे उसकी सेवा करो। यदि उसे मानसिक क्लेश हो तो उस क्लेशको भुलाकर प्रसन्न करनेकी चेष्टा करो। जब वह बाहरसे थका-माँदा आवे तो हँसकर मीठे वचनोंसे उसकी थकावट दूर करो, प्रणाम करो, गर्मी हो तो पंखा हाँको, शीतल जल पिलाओ, पतिके रोगसे या उसके किसी कार्यसे भी घृणा न करो, किंतु अपनी प्रेमभरी चेष्टासे उसे रोगमुक्त करने और सुमार्गपर लानेका यत्न करो।

५—पतिसे छल, कपट, छिपाव या चोरी कभी मत करो। सदा सत्यका व्यवहार करो, पति यदि तुमसे कुछ झूठ भी बोल दे तो भी तुम सत्य कभी न छोड़ो और भूलकर भी उसे न कोसो।

६—पति भला-बुरा कैसा ही क्यों न हो, परंतु तुम पर-पुरुषकी ओर बुरी नीयतसे कभी न देखो, भगवान्‌ने तुम्हारे लिये जो कुछ विधान कर दिया है, उसीमें सन्तुष्ट रहो, पराये जूठे पकवान खानेकी अपेक्षा घरकी सूखी रोटी उत्तम है। यदि तुमने पर-पुरुषकी तरफ देख लिया तो फिर तुममें और वेश्यामें क्या अन्तर रहा और इसका फल भी कितना विपरीत होता है। उसे भी याद रखो।

गोस्वामी तुलसीदासजीने रामायणमें कहा है—

उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं॥
मध्यम परपति देखइ कैसें। भ्राता पिता पुत्र निज जैसें॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई। सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई॥
बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई॥

पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई॥
छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई॥
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। बिधवा होइ पाइ तरुनाई॥

७—विषयोंसे तृप्ति कभी नहीं हुआ करती, ज्यों-ज्यों विषय मिलते हैं, त्यों-त्यों तृष्णा बढ़ती रहती है। इसीलिये स्वप्नमें भी पर-पुरुषकी ओर मन न दौड़ाओ। आज एकको छोड़कर दूसरेकी तरफ मन दौड़ाओगी तो कल उसे भी छोड़नेकी इच्छा होगी। पर-पुरुष तो दूर रहा, अपने पतिके साथ भी ऋतुकालके सिवा विहार न करो।

८—यदि पति पर-स्त्रीगामी है तो भी उससे चिढ़कर बुरा व्यवहार न करो और न सौतसे ईर्ष्या या डाह करो। तुम तो अपना धर्म समझकर पतिकी सेवा ही करती रहो, तुम्हारे पतिव्रत-धर्मके तेजसे और तुम्हारी सेवाके प्रभावसे पतिकी बुद्धि आप ही सुधर सकती है।

९—पतिके मित्रोंको मित्र और शत्रुओंको शत्रु समझो, पतिका भेद कभी किसीसे न कहो, उसके मित्रोंसे भी नहीं।

१०—दुःख, दरिद्रता या और किसी हीन दशामें पतिकी सेवा-टहल विशेष चावसे करो।

११—यदि तुम रूपवती और गुणवती हो तथा तुम्हारा पति कुरूप और गुणहीन है तो भी तुम अपने रूप और गुणके घमण्डमें आकर कभी पतिकी निन्दा न करो। पतिसे कभी किसी बातका अभिमान न करो, सदा अनुरक्ता दासी बनकर रहो। जहाँतक हो सके छायाकी भाँति पतिकी अनुगामिनी रहो, जैसे—श्रीसीताजी, सावित्री, दमयन्ती और शैव्या आदि रही थीं।

१२—पतिसे निष्कपट, निर्लोभ और अविचल प्रेम रखो। गहने-कपड़ेके लिये पतिको कभी मत सताओ।

१३—पतिकी सब प्रकारकी सेवा सदा अपने हाथोंसे करो, नौकरों-चाकरोंके भरोसेपर मत रहो। पतिके लिये रसोई खुद बनाओ और उसे अपने हाथोंसे परोसो। पान-सुपारी आदि भी अपने ही हाथोंसे दो।

१४—पतिसेवाको देवसेवासे भी अधिक समझो, क्योंकि बड़े-बड़े तप और व्रत भी पतिसेवाके सोलहवें हिस्सेके बराबर ही हैं।

१५—पतिके साथ एकप्राण और दो देह होकर रहो।

१६—पतिकी प्रसन्नताके बिना स्वर्गसुखको भी तुच्छ समझो।

ये सोलह नियम तो तुम्हें पतिसेवाके बतलाये, अब वे बातें बतलाती हूँ कि जिनका सम्बन्ध दूसरोंसे भी है।

१—अपनी सास, ससुर, जेठानी, देवरानी, ननद या दूसरे नातेदारोंके साथ सदा अच्छा बर्ताव करो। तुम जैसा बर्ताव दूसरोंके साथ करोगी वैसा ही तुम्हें भी प्राप्त होगा।

२—अपनी सासको पतिकी पूजनीया माता जानकर उसका सदा आदर करो। तुम उसे अपनी माताके समान समझो, उसकी आज्ञा मानो, कभी मनमें ऐसा भाव मत आने दो कि यह तो मेरे पतिकी कमाई खाती है। याद रखो, वह तुम्हारा पति पीछेसे बना है, इसका पुत्र पहलेसे है, तुम्हारी अपेक्षा तुम्हारे स्वामीपर तुम्हारी सासका अधिक अधिकार है। यों समझकर सास जो कहे सो करो, कभी उसके विरुद्धाचरण न करो। यदि तुम सासके साथ बुरा बर्ताव करोगी तो तुम्हारी बहू भी आगे चलकर तुमसे वैसा ही बर्ताव करेगी।

३—ननदका भी पतिकी बहिन होनेके कारण घरमें कुछ हक समझो, यथासम्भव उसकी माँग पूरी करो और उससे कभी मत लड़ो।

४—भौजाईको अपने भाईकी अर्धांगिनी समझकर उससे प्रेम करो, ऐसी भावना मनमें कभी मत लाओ कि यह पराये घरकी लड़की मेरे बापके घरकी मालकिन कैसे बन गयी। ऐसा समझोगी तो घरमें कलह होगा।

५—बहूको लड़कीके समान समझकर उसको प्यार करो, उसके रोग-शोकमें उसे सान्त्वना दो और उसके कष्ट दूर करनेका प्रयत्न करो, यहाँ तो तुम्हीं उसकी माता हो। बहूके साथ कभी बुरा बर्ताव न करो। इस बातको याद करो कि जब तुम्हारी सास तुम्हारे बहूपनके समय तुम्हें बुरा-भला कहा करती थी, तब तुम्हें कितना कष्ट होता था, वैसा ही इस समय इस बहूको भी होता होगा। बहूको कष्ट पहुँचाते समय यह भी याद कर लिया करो कि मेरी लड़की जब अपनी सासद्वारा मिले हुए दुःखोंका मेरे सामने वर्णन करती है, तब मुझे कितना दुःख होता है और अनायास ही मेरे मुँहसे लड़कीकी सासके प्रति कैसे कड़े वचन निकल पड़ते हैं। इसी प्रकार बहूके पीहरमें भी होता होगा। बहूकी माताको भी उतना ही कष्ट होता होगा और उसके मुँहसे भी मेरे प्रति वैसे ही शब्द निकलते होंगे।

६—लड़कीको यही शिक्षा दो कि वह ससुरालमें जाकर सबकी और खासकर पतिकी सेवा करे, ससुरालवालोंकी बुराई या उनका भेद किसीसे भी न कहे। यदि तुम्हारी लड़की तुम्हारे सामने अपने ससुरालवालोंके दोष बतायेगी तो तुम्हें दुःख होगा और सम्भव है कि उनसे तुम्हारा मनोमालिन्य भी हो जाय। अतएव यदि लड़की ससुरालवालोंकी निन्दा करती हो तो वह तुम मत सुनो। वरन् अपनी लड़कीको समझा दो कि बेटी! तुम्हारा कल्याण उनकी सेवामें ही है। यदि लड़कीकी शिकायत वास्तवमें सुननेयोग्य हो तो उसे सुन लो, परंतु उसका प्रतीकार

ऐसे उपायोंसे करो कि जिससे दोनों तरफका प्रेम बना रहे और लड़कीका दुःख भी दूर हो जाय।

७—देवरानी और जेठानीके बालकोंको बड़े प्रेमसे देखो। यदि वे अपने बालकोंको झिड़कें या उनसे नाराज रहें तो भी तुम तो प्रेम ही करो। क्योंकि उनको अपना नाराज होना तो बुरा नहीं मालूम होता, परंतु उनके बालकोंके साथ तुम्हारा नाराज होना उन्हें अखरेगा।

८—भगवान्ने यदि तुम्हें बालक दिया है तो उसे गुणवान् और विद्वान् बनानेकी चेष्टा करो। यदि आरम्भसे ही तुम उसे गाली बकना या मारना सिखाओगी तो वह पहले तुम्हींको गाली देगा और मारेगा।

९—तुम्हारी चेष्टासे बालक गुणवान् और विद्वान् होकर धर्म और देशकी सेवा कर अपने कुलका नाम उज्ज्वल कर सकेगा और तुम्हारे बिगाड़नेसे वह कुलका नाम डुबाकर जीवनभर स्वयं दुःख भोगेगा और तुम्हें भी दुःख देगा।

१०—यदि तुम्हारे कन्या हो तो मनमें नाराज मत होओ, ईश्वरको मत कोसो और उस कन्यासे भी बुरा व्यवहार मत करो। अकसर माताएँ आरम्भमें लड़केकी अपेक्षा लड़कीसे कम प्यार किया करती हैं; परंतु ऐसा करना ठीक नहीं। लड़की भी तुम्हारा मुख उज्ज्वल और तुम्हारे वंशकी रक्षा कर सकती है। सावित्री लड़की ही थी, परंतु उसने दोनों कुलोंकी कैसी रक्षा की।

११—यदि तुम्हारे बालक न हो या होकर मर जाय तो प्रारब्धका दोष समझकर सन्तोष करो, आवश्यक मालूम हो तो अनुभवी वैद्यसे चिकित्सा कराओ, परंतु परमात्मापर मन मैला न करो और न गोद लेनेकी चेष्टा करो, यह मत समझो कि पुत्र हुए बिना अच्छी गति नहीं मिलेगी। मोक्ष भी बिना पुत्र मिल सकता है।

मनुमहाराज कहते हैं—

अनेकानि सहस्राणि कुमारब्रह्मचारिणाम्।
दिवं गतानि विप्राणामकृत्वा कुलसंततिम्॥

(अ० ५। १५९)

कई हजार कुमार ब्रह्मचारी ब्राह्मणोंने बिना सन्तान उत्पन्न किये ही स्वर्गलोकको पाया है।

उत्तम गति उत्तम कर्मोंसे मिलती है, सन्तान न हो तो भी कोई हानि नहीं।

१२—सन्तानके लिये जन्तर, मन्तर, गण्डा, ताबीज कभी मत कराओ। झूठे, ठग, पाखण्डी, धूर्त और बदमाशोंके फन्देमें न फँसो और न इसके लिये किसी देवी-देवताकी मानता करो।

१३—बिना प्रयोजन एक पैसा भी मत खर्च करो, जहाँतक बन सके, खर्च कम लगाओ, अनावश्यक वस्तु सस्ती मिलती हो तो भी मत खरीदो, दुहरे-तिहरे गहने-कपड़े कभी मत बनवाओ, लेन-देनमें दूसरोंकी होड़ मत करो। कड़ी कमाईका पैसा फजूल खर्च करनेसे धनकी हानि होगी और पति नाराज होगा। साथ ही तुममें फजूलखर्चीकी बुरी टेव पड़ जायगी। याद रखो कि अच्छी अवस्थामें जो फजूलखर्चीकी आदत डाल लेती है, उसे बुरी अवस्थामें दूना दुःख होता है।

१४—विलासिताकी चीजोंसे दूर रहो। शौकका कोई सामान इकट्ठा न करो। यदि करोगी तो तुम्हें दुःख होगा ही; परंतु तुम्हारी सन्तान भी विलासिताके चक्करमें पड़कर बड़ा क्लेश पावेगी।

१५—घरका सारा कार्य जहाँतक हो सके अपने हाथोंसे करो। पीसने, कातने, रसोई बनाने और बर्तन माँजने आदि गृहकार्योंके करते रहनेसे तुम्हारे शरीरके अवयव ठीक रहेंगे। परिश्रम होते रहनेसे खाया हुआ अन्न अच्छी तरह पचेगा, मन्दाग्नि वगैरहकी

बीमारी न होगी, पैसेकी बचत होगी, अच्छी और ताजी चीजें मिलेंगी, पवित्रता बनी रहेगी और धर्म बचेगा।

१६—यदि नौकरोंसे काम करानेकी आवश्यकता हो तो भी तुम उनके कामोंकी बराबर जाँच करती रहो। तुम्हारी जाँच-पड़तालसे नौकर सावधान रहेंगे, काम ठीक होगा और चोरी भी नहीं होगी।

१७—नौकर और नौकरानियोंके साथ सच्चे मनसे प्रेम और दयाका बर्ताव करो, परंतु उन्हें मुँह मत लगाओ।

१८—घरकी प्रत्येक चीजको सँभालकर रखो, सफाई-सुथराईकी तरफ विशेष ध्यान दो; बर्तन-कपड़े और बिछौने सदा साफ रखो। किसी भी घरकी चीजको तुम अपने आलस्यसे बिगड़ने और उजड़ने मत दो। नौकरोंके भरोसे छोड़ देनेसे बिगड़ने और उजड़नेकी अधिक सम्भावना है।

१९—घरमें सीने, पिरोने और बेल-बूटे काढ़नेका काम आवश्यकतानुसार स्वयं कर लिया करो, इससे घरमें एक कला बनी रहेगी और पैसे बचेंगे।

२०—जवानीमें ही कोई ऐसा निर्दोष कमाईका काम सीख लो कि जिससे कभी घरवालोंके मर जानेपर बुरी अवस्थामें तुम्हें सहायताके लिये दूसरोंका मुँह न ताकना पड़े।

२१—मुँहसे कभी कड़े वचन मत बोलो, मीठे वचन सबको प्यारे होते हैं। देखो!

कागा किसका धन हरे, कोयल किसको देय।
मीठे शब्द सुनाय कर, जग अपनो कर लेय॥

२२—यदि तुमसे कोई लड़े, तुम्हें चार गालियाँ दे तो भी तुम चुप रहो। बदलेमें गाली न दो। तुम्हारी चुप्पीसे ही लड़ाई मिट जायगी। परंतु यदि तुम उत्तर दे बैठोगी तो रार बढ़ेगी।

२३—झूठ कभी मत बोलो, झूठसे वाणीका विश्वास चला जाता है। जो कुछ बोलो सो सत्यके काँटेपर तौल-तौलकर, परंतु इतना खयाल रखो कि तुम्हारा सत्य कहीं लोगोंके लिये कड़वा या अहितकारी न हो जाय।

२४—किसीसे दिल्लगी न करो, खासकर किसी अंगहीन या गुणहीनकी अथवा किसीसे भूल हो जानेपर उसकी दिल्लगी मत करो। ऐसी अवस्थामें यदि कोई तुम्हारी दिल्लगी उड़ावे तो तुम्हें कितना कष्ट होगा, उसी प्रकार दूसरेको भी होता है।

२५—उलाहना देनेकी आदत छोड़ दो, मतभेदी बातें न करो, भूल सबसे होती है, तुम अपनी भूलोंको देखो और उन्हें सुधारनेका यत्न करो।

२६—किसीकी निन्दा न करो, किसीके दोषोंको प्रकट न करो, दूसरेके दोषोंके कहने, सुनने और सोचनेसे उससे वैमनस्य होगा, तुम्हारे मनमें उसके प्रति द्वेष, घृणा और क्रोधकी जागृति होगी, बारम्बार दोषोंकी आलोचनासे वे दोष तुम्हारे अन्दर भी आने लगेंगे और पाप तो होगा ही। दूसरोंके गुणोंकी प्रशंसा जरूर करो।

२७—अपने मुँहसे अपनी प्रशंसा कभी मत करो, सत्कार्योंके प्रकाशसे तुम्हारा पुण्य घटेगा, मानकी इच्छा बढ़ेगी और धर्मका ह्रास होगा।

२८—प्रमादवश कभी बातचीतमें हठ न करो, इससे मन मैला होता है और वैमनस्य बढ़ता है।

२९—अश्लील, गन्दे और असत्य गीत कभी न गाओ; यदि आवश्यक हो तो भगवान्‌के गुणानुवाद और विनयके पद गाओ, रास्तोंमें गाना उचित नहीं।

३०—बहुत बोलना, बेमौके बोलना, समयपर न बोलना, बीचमें बोलना, बिना पूछे बोल उठना, बिना सोचे-समझे

बोलना, शीघ्रतासे बोलना, ऊटपटाँग बकना और व्यर्थकी बातें करना आदि वाणीके दोष हैं, इनसे सदा बचो।

३१—तुम्हारे घरपर जो कोई आये उससे प्रेम और आदरपूर्वक मिलो, उसकी आवश्यक बातोंका उत्तर दो, रुखाई और अभिमानका बर्ताव कभी न करो।

३२—पड़ोसियोंसे प्रेम करो और उनके कष्टोंमें उनका साथ दो।

३३—सबसे प्रेम रखो और मिल-जुलकर रहो, तुम ऐसा करोगी तो लोग भी समयपर तुम्हारे साथ ऐसा ही करेंगे।

३४—घरपर आये हुए पाहुनेका आदर-सत्कार और उसके लिये भोजनादिका प्रबन्ध शीघ्रतासे और प्रेमसे करो।

३५—किसी भी भूखे अतिथि-अभ्यागतको यथासाध्य घरसे खाली मत लौटाओ।

३६—सास-ससुर और पतिकी बुराई किसीके सामने कभी न करो।

३७—अपने घरका भेद कभी किसीसे न कहो। इससे लाभ तो होना कठिन है; परंतु भेद खुल जानेसे बुराई होना तो मामूली बात है।

३८—गहने-कपड़ोंका मोह कम करो, उन गरीबोंकी तरफ खयाल करो कि जिनकी लाज रखनेके लिये कपड़ेके छोटे-छोटे टुकड़े भी कठिनतासे मिलते हैं।

३९—देवरानी-जेठानीके गहने-कपड़ोंसे ईर्ष्या या डाह मत करो और उसी प्रकारके या उनसे बढ़िया गहने-कपड़े बनवा देनेके लिये घरवालोंसे हठ न करो।

४०—घरमें अपनेसे जो बड़ी स्त्रियाँ हों उन्हें नित्य प्रणाम करो।

४१—गहने-कपड़ोंसे सज-धजकर बाहर जानेकी आदत छोड़ दो। बजनेवाले गहने कभी मत पहनो, क्योंकि इससे दूसरोंका ध्यान तुम्हारी ओर खिंचता है।

४२—इतने जोरसे न बोलो कि जिससे तुम्हारे शब्द घरसे बाहरतक सुनायी दें। बिना मतलब घरके दरवाजेपर खड़ी मत होओ। खिड़की या झरोखोंसे बाहरकी तरफ मत झाँको।

४३—व्यर्थ डोलना और बोलना छोड़ दो। बेमतलब दूसरोंके घरोंपर आना-जाना छोड़ दो, इससे महत्त्व घटता है, सत्कारमें कमी होती है तथा और भी कई दोष पैदा हो जाते हैं।

४४—किसी पुरुषके पास अकेली मत बैठो। जवान पिता-भाई और पुत्रके पास भी नहीं। अकेलेमें बड़े-बड़े तपस्वियोंके मन भी डिग जाते हैं।

४५—बहुत-से मनुष्योंके बीचसे न निकलो और न पुरुषोंकी भीड़में बैठो।

४६—मेले, झाँकी, जुलूस, भीड़-भाड़ और नाटक-सिनेमा आदिमें कभी मत जाओ।

४७—छोटे-बड़े सबका यथोचित सम्मान करो। जो कोई शिक्षाकी बात कहे उसे सुनो और मानो।

४८—किसीसे वैर न करो। यदि किसी कारणवश कभी किसीसे मनोमालिन्य हो जाय तो तुरन्त उससे क्षमा माँग लो।

४९—गन्दी पुस्तकें कभी मत पढ़ो। रामायण, गीता, मनुस्मृति और महाभारत आदि सद्ग्रन्थोंको मन लगाकर पढ़ो।

५०—जहाँतक हो सके किसी परायी चीजको न मँगाओ और यदि किसी विशेष आवश्यकतामें मँगाओ तो काम निकलते ही उसे तुरन्त वापस लौटा दो।

५१—तुम्हारी चीजको कोई दूसरा अपने कामके लिये माँगे तो कभी इनकार मत करो, परंतु वापस मँगवानेका भी खयाल रखो।

५२—मौका लगे तो किसी भी रोगीकी सेवा बड़े चावसे करो, न उकताओ, न घबड़ाओ और न घृणा करो।

५३—नाई, ब्राह्मण, पुरोहितानी या दलालोंके भरोसे ब्याह-शादीके सम्बन्ध कभी मत करो।

५४—बनावटी देवताओंको न पूजो, न उनकी मानता करो और न उनके लिये बच्चोंके बाल चढ़ाओ।

५५—परदा उतना ही करो जिससे स्वास्थ्य, लज्जा और कार्यमें हानि न हो। आजकल स्त्रियाँ अपने निकट-सम्बन्धियोंसे तो परदा करती हैं, पर दूसरोंके सामने खुले मुँह फिरती हैं। ऐसा ठीक नहीं। गैर लोगोंसे तो परदा अधिक करना चाहिये, लज्जा स्त्रीका भूषण है।

५६—कपड़ा ऐसा पहनो और ओढ़ो कि जिससे शरीरका कोई भी अंग खुला न रहे, शरीर कपड़ेके अन्दरसे न दीखे, न बुरा लगे और शरीरकी रक्षा भी होती रहे। शरीरकी रक्षा हो, परंतु लाज न रहे ऐसे कपड़े कभी मत पहनो। जहाँतक बन पड़े विदेशी मिलोंमें बने हुए और रेशमी वस्त्रोंका व्यवहार त्याग दो। विदेशी वस्त्रोंके व्यवहारसे देशकी बड़ी आर्थिक हानि होती है। साथ ही विदेशी और मिलोंके बने हुए कपड़े प्राय: जानवरोंकी चर्बीसे सने रहते हैं। लाखों मन जानवरोंकी चर्बी इसी काममें लगती है और रेशमी वस्त्रोंमें तो जीते हुए असंख्य कीड़ोंकी हत्या होती है। इसलिये इन्हें छोड़कर जहाँतक हो सके चरखेसे कते हुए सूतके हाथसे बुने हुए कपड़े पहनो। इनमें चर्बी नहीं लगती, गरीब भाई-बहनोंका पेशा बना रहता है। मजदूरोंके पैसे मिल जानेसे गरीबोंका पेट भरता है और उन्हें पेटके लिये दुराचार नहीं करना पड़ता, जीव हिंसा नहीं होती, पवित्रता बनी रहती है, लज्जा नहीं जाती और धर्म बचता है।

५७—जहाँतक हो सके इन पन्द्रह स्त्रियोंसे सदा बचो—१—वेश्या, २—व्यभिचारिणी, ३—पतिकी निन्दा करनेवाली,

४—पतिसे वैर रखनेवाली, ५—दुष्ट स्वभाववाली, ६—कुटनी, ७—चोर और जुआरिन, ८—टोना-गण्डा करनेवाली, ९—आखा देखनेवाली, १०—कर्कशा (सदा लड़नेवाली), ११—निर्लज्जा, १२—घमण्डिनी, १३—कटुवादिनी, १४—बकवाद करनेवाली, १५—कामोन्मादिनी।

५८—इन्द्रियाँ और मनको जीतनेकी चेष्टा करो। जीभके स्वादमें मत फँसो। चटोरापन त्याग दो।

५९—पति, पुत्र, परिवार, धन, रूप, गहने, कपड़े, मलिकाई और स्वास्थ्य आदि किसी वस्तुका घमण्ड न करो। संसारकी सारी वस्तुएँ नाश होनेवाली हैं, इनके लिये घमण्ड करना मूर्खता है।

६०—बालक और बालिकाओंको पढ़ानेका पूरा खयाल रखो।

६१—ऋतुकालके पहले तीन दिनोंमें किसीको स्पर्श न करो।

६२—पाप करनेमें सदा डरो, ईश्वर सर्वव्यापी है, वह तुम्हारे शरीर, मन और वाणीद्वारा होनेवाले सभी कार्योंको देखता है, उससे कुछ छिपा नहीं रह सकता, अतएव पाप करते समय उससे शरमाओ और उसका भय करो।

६३—लोभ और प्रतिष्ठाके लिये धर्म मत छोड़ो।

६४—दीनोंपर दया करो, परमात्माकी भक्ति करो। परमात्माके नामका जप करो और परमात्माके स्वरूपका ध्यान करो।

परिशिष्ट

सरला—बहिन! धर्मकी बातें तो तुमने थोड़ेसेहीमें बहुत कुछ समझा दीं, अब स्त्रियोंकी स्वास्थ्यरक्षा और बच्चोंके पालनके सम्बन्धमें कुछ खास-खास बातें समझा दो तो बड़ा उपकार हो।

सावित्री—तुमने बड़ी अच्छी बात पूछी, शरीर-रक्षा भी तो धर्म है, मन लगाकर सुनो, संक्षेपमें ही कहती हूँ। बड़े-बड़े महापुरुषोंका जन्म स्त्रियोंसे हुआ है। स्त्रियोंके स्वास्थ्यको बचानेकी बड़ी जरूरत है। स्त्रियोंके ज्यादा रोग प्रायः रज-सम्बन्धी ही हुआ करते हैं। इसलिये दूसरे रोगोंकी बाबत कुछ न कहकर इसीके सम्बन्धमें कुछ कह रही हूँ। भारतवर्षमें बारह-तेरह सालकी उम्रमें रजोदर्शन होने लगता है, जो तन्दुरुस्त स्त्रियोंके प्रायः अट्ठाईसवें दिन शुरू हो जाता है और तीनसे पाँच दिनोंतक जारी रहता है। रजोदर्शनके नियमोंका पालन न करनेसे ही बहुत-सी बीमारियाँ होती हैं।

सरला—रजोदर्शनके समय कौन-कौनसे नियमोंका पालन करना चाहिये।?

सावित्री—सुनो!

(१)स्वामीके पास कभी सोना नहीं चाहिये।

(२)किसी प्रकारका ज्यादा परिश्रम नहीं करना चाहिये।

(३)ठण्डी जगहमें धरतीपर नहीं सोना चाहिये।

(४)जबतक स्राव रहे नहाना बिलकुल नहीं चाहिये।

(५)पेटको सर्दी नहीं लगानी चाहिये।

(६)गाड़ियोंपर चढ़ना-उतरना, सीढ़ी चढ़ना, ऊँची जगहपर चढ़ना-उतरना और किसी भारी चीजको उठाना आदि भी हानिकारक है।

सरला—इन नियमोंके पालन न करनेसे क्या होता है?

सावित्री—स्वामीके पास जानेसे इन्द्रिय-संयम रहना कठिन है। ऋतुस्रावके समय पुरुषसंगसे स्त्रियोंको बड़ी कठिन बीमारियाँ हो जाती हैं, कमरमें पीड़ा होने लगती है, ऋतुस्राव बढ़कर कई दिनोंतक जारी रहता है, शरीर कमजोर हो जाता है, उन्माद रोग (हिस्टीरिया) हो जाता है, अनियमित ऋतुसे सन्तान पैदा होनेमें रुकावट पड़ जाती है, प्रदर आदिके बुरे रोग भी प्रायः इसीसे होते हैं। इसके सिवा पुरुषोंको भी बड़ा नुकसान पहुँचता है, उसके प्रज्ञा, तेज, बल, नेत्र, शक्ति और आयुका नाश होता है, अनेक प्रकारकी बीमारियाँ घेर लेती हैं। इसी तरह अधिक परिश्रम या चढ़ने-उतरने आदिसे भी ऋतुस्राव बढ़ जाता है।

सर्दी लगने या पेटमें ठण्ड पहुँचनेसे ऋतुस्राव हठात् बन्द हो जाता है, जिससे अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। कमर दुखना, सिरमें चक्कर आना, आँख और सिरका जलना, भूखका बन्द हो जाना, आँखोंकी नजर घट जाना, अन्धीतक हो जाना आदि रोग हो जाते हैं। हमारे त्रिकालदर्शी शास्त्रकारोंने रजस्वला स्त्रीके लिये अलग रहने, किसीको न छूने, अलग सोने, किसीको अपना मुँह न दिखाने आदिकी जो व्यवस्था कर दी है, उससे धर्म और स्वास्थ्य-रक्षामें बड़ी भारी मदद मिलती है, उन सब नियमोंका पालन जरूर करना चाहिये।

सरला—अच्छा! अब गर्भकालके नियम भी बतला दो।

सावित्री—गर्भकालमें तो बड़ी सावधानीकी जरूरत है। स्त्रियाँ अगर चाहें और कोशिश करें तो नीरोग रहकर बिना किसी कष्टके भक्त, वीर, धीर सन्तान उत्पन्न कर सकती हैं।

गर्भकालमें क्या नहीं करना चाहिये?

(१) पति-सहवास कभी नहीं करना चाहिये।

(२) पतिके साथ एक बिछौनेपर नहीं सोना चाहिये। स्त्री-पुरुषोंके बिछौने तो साधारण अवस्थामें भी सदा अलग रखनेकी बड़ी जरूरत है, परंतु गर्भकालमें तो इसकी खास जरूरत है।

(३) बोझ नहीं उठाना चाहिये। कूदना, दौड़ना, जोरसे चढ़ना-उतरना नहीं चाहिये।

(४) बिना अच्छे वैद्यकी सलाहके कोई दवा नहीं लेनी चाहिये। कब्ज हो तो थोड़ा-सा शुद्ध अरण्डीका तेल लेना हानिकारक नहीं है।

(५) चाय, कॉफी, भाँग आदि कोई भी नशीली चीज नहीं खानी चाहिये।

(६) कपड़ा हल्का और साफ पहनना चाहिये। कमर कसकर साड़ी नहीं पहननी चाहिये।

(७) लड़ना, झगड़ना, रोना, चिल्लाना आदिका सर्वथा त्याग करना चाहिये।

क्या करना चाहिये?

(१) सदा हल्का, जल्दी पचनेवाला पुष्टिकर, अल्पाहार करना चाहिये।।

(२) पानी साफ पीना चाहिये।

(३) कोठा साफ रखना चाहिये।

(४) शरीर ठीक हो तो रोज एक दफे नहाना जरूर चाहिये; परंतु पानी अधिक गर्म या ठण्डा न हो।

(५) घरमें साधु-महात्मा, वीर पुरुषके चित्र रखने चाहिये।

(६) काम, क्रोध, हिंसा, शोक, मोह, लोभ, चोरी, दम्भ, असत्य, भय आदिसे बचकर क्षमा, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, शान्ति,

आनन्द, विवेक, सन्तोष, अस्तेय, निष्कपटता, सत्य, अभय आदि दैवी गुणोंकी भावना सर्वदा करनी चाहिये।

(७) व्यभिचारसम्बन्धी बातें कहने-सुनने और स्मरण रखनेसे सदा बचकर सती स्त्रियोंके चरित्रोंका श्रवण, मनन करना चाहिये।

(८) हो सके जहाँतक महाभारतके शान्तिपर्व, गीताजी, श्रीमद्भागवतके तीसरे और ग्यारहवें स्कन्ध, तुलसीकृत रामायण और भक्तमाल आदिकी चुनी हुई कथाएँ सुननी और उसकी आलोचना करनी चाहिये।

(९) भगवन्नामका जप सदा करना चाहिये।

(१०) दीनोंपर दयाका भाव सदा ही हृदयमें जाग्रत् रखना चाहिये।

सरला—इन नियमोंके पालनसे क्या होता है?

सावित्री—परम कल्याण होता है। बहुत विस्तार करनेका तो समय नहीं है, इतना ही कहती हूँ कि यदि कोई बहिन मन लगाकर इन नियमोंको पाले तो ईश्वर-कृपासे वह प्रह्लाद, ध्रुव, नारद, हरिश्चन्द्र, बुद्ध, सीता, सावित्री-सरीखी सन्तानोंकी जननी होकर अपना और जगत्‌का बड़ा भारी कल्याण कर सकती है।

सरला—तुमने ये बातें कहाँसे सीखीं? बहिन!

सावित्री—मेरी माताने ये सब नियम बतलाये थे। हमारे घरोंकी बूढ़ी स्त्रियाँ इन सब विषयोंमें इतनी ज्यादा जानकारी रखती थीं, जितनी अच्छे-अच्छे वैद्योंको नहीं होती। बहुत-से लोग मेरी माताके पास स्त्रियोंकी बीमारी और बच्चोंके पालनके सम्बन्धमें सलाह लेने आया करते थे। आजकल स्त्रियोंमें फैशन तो बढ़ रहा है लेकिन जीवन-निर्वाहकी जरूरी बातोंकी तरफ उनका खयाल बिलकुल नहीं है, इसीसे डॉक्टर-वैद्योंकी भरमार हो गयी है।

सरला—बहिन! तुमने बड़ा उपकार किया, अब कृपाकर प्रसूतकाल और बच्चोंके पालनसम्बन्धी कुछ खास-खास नियम और बतला दो।

सावित्री—प्रसव प्रकृतिकी स्वाभाविक क्रिया है। यदि शरीर तन्दुरुस्त हो तो परमेश्वरकी मायासे प्रसवकालमें विशेष कष्ट नहीं होता। किसी कारणवश प्रसवमें कष्ट होता हो तो अच्छे वैद्यकी सलाहसे उपचार करना चाहिये। प्रसूताका घर साफ-सुथरा और हवादार होना चाहिये। कम-से-कम हवा आने-जानेलायक बारियाँ उसमें जरूर होनी चाहिये। कपड़े साफ रखने चाहिये। जेर वगैरह काटनेके लिये जो दायी बुलायी जाय वह तेज, शान्त, धीर, अनुभवी होनी चाहिये। उसके हाथोंका नख कटाकर हाथ अच्छी तरह साफ करा देने चाहिये। प्रसूतिको अधिक सर्दी और अधिक गर्मी न लगने देनेका खयाल रखना चाहिये।

स्त्रीको चाहिये कि जबतक फिरसे रजस्वला न होने लगे तबतक पतिके पास न जाय। नहीं तो कम-से-कम चार महीने तो जरूर ही बचना चाहिये। जल्दी पुरुष-सहवाससे दूध बिगड़ जाता है जिससे बच्चेको बड़ा नुकसान पहुँचता है, साथ ही पुरुष-संगसे स्त्री जल्दी रजस्वला होने लगती है, जिससे उसके रजमें विकार हो जाता है और जल्दी-जल्दी गर्भधारणसे स्त्रीका स्वास्थ्य भी सदाके लिये बिगड़ जाता है।

अब बच्चोंके पालनके कुछ नियम सुनो—

(१) बच्चेको साफ कपड़ोंमें रखना चाहिये, सर्दी-गर्मीसे बचाना चाहिये। सर्दी बच्चोंके लिये बहुत घातक हुआ करती है। रोज तेल लगाकर गरम पानीमें निचोड़े हुए गमछेसे उसका शरीर धीरे-धीरे पोंछ देना चाहिये।

(२) पहले दिन माताका स्तनपान कराना चाहिये। स्तनोंमें पहले दिन दूध नहीं उतरे तो भी बालकको स्तनपान करानेकी कोशिश करनी चाहिये। स्तनकी बोटी बच्चेके मुँहमें लेनेसे दूध उतरने लगेगा। भगवान्‌की रचना अनोखी है। स्तनके साथ गर्भाशयका बड़ा सम्बन्ध है। स्तनपानसे इधर बच्चेको पुष्टि मिलती है, उधर माताके गर्भाशयका संकोच होता है, जिससे माता रक्तस्रावकी भयानक पीड़ासे बच जाती है। माँका दूध बालकके लिये बड़ा हितकारी है, जिन बच्चोंको माँका दूध मिलता है वे सर्वथा नीरोग, बलवान् और दीर्घजीवी हो सकते हैं।

आजकल फैशनके फेरमें पड़कर कुछ शिक्षिता कहलानेवाली स्त्रियाँ प्रकृतिके इस नियमको कुचलकर बच्चेको स्तनपान करानेमें अपने यौवनकी हानि समझती हैं। पर ऐसा करनेवाली बच्चे और अपने स्वास्थ्यके प्रति बड़ा अन्याय एवं पाप करती हैं।

(३) बिना जरूरत स्तनपान नहीं कराना चाहिये। किस अवस्थामें कितना दूध पिलाना चाहिये इसकी साधारण तालिका इस प्रकार है—माता और बच्चेके स्वास्थ्यके अनुसार इसमें कम-ज्यादा भी किया जा सकता है। प्रसवसे लेकर दस दिनतक हर दो-दो घण्टेपर एक बारमें आधा छटाँक दूध पिलाना चाहिये। इसके बाद डेढ़ महीनेकी उम्रतक हर ढाई घण्टेपर पौन छटाँकसे एक छटाँकतक, फिर छः महीनेकी उम्रतक तीन या साढ़े तीन घण्टेपर डेढ़-से दो छटाँकतक, छः महीनेके बाद नौ महीनेकी उम्रतक हर साढ़े तीन घण्टेपर तीन छटाँकतक और दस महीनेकी उम्रमें हर चार घण्टेपर चार छटाँकतक पिलाना चाहिये। बच्चेको वहींतक स्तनपान कराना उचित है जहाँतक रजोदर्शन न

हो; रजोदर्शन बहुधा प्रसवके आठ महीने बाद हुआ करता है। इसके बाद बच्चेको बाहरी खुराक देनी चाहिये।

(४) स्तनपान नियमसे कराना चाहिये। बेनियम चाहे जब स्तनपान करानेसे बालकको पेटकी बीमारियाँ हो जाती हैं। हमारे शरीर बहुत मजबूत और तन्दुरुस्त हैं; परंतु एक साथ अधिक खाने, बार-बार अनियमितरूपसे खाने या कुपथ्य भोजनसे जब हमलोगोंको अजीर्ण, संग्रहणी और मन्दाग्नि आदि बीमारियाँ हो जाती हैं, तब कोमल बच्चेको बीमारी होनेमें तो अचरज ही क्या है? जो माताएँ एक बारमें ज्यादा दूध पिला देती हैं या किसी कारणवश जरा-सा रोते ही बच्चोंको स्तनपान कराने लगती हैं, वे बहुत बड़ी भूल करती हैं। इनसे अजीर्ण होकर बच्चोंके पेट फूल जाते हैं, दस्त, कै होने लगते हैं, उनका शरीर सदा रोगी रहने लगता है। बहुत-सी माताएँ तो जब बच्चा अजीर्णके कारण पेट दुखनेसे रोता है तब अज्ञानवश जबरदस्ती उसके मुँहमें स्तनकी बोटी देकर उसे दूध पिलाने लगती हैं, जिससे उसकी बीमारी और भी बढ़ जाती है। इसलिये दूध नियमित समयपर ही पिलाना चाहिये।

(५) कई स्त्रियाँ एक भारी भूल और करती हैं, बच्चोंका रोना बन्द करनेके लिये उन्हें अफीम दिया करती हैं, जिससे उनके शरीरको बड़ा भारी नुकसान पहुँचता है। अतः माताओंको चाहिये। कि भूलकर भी बच्चोंको अफीम देकर सुलानेकी आदत न डालें।

(६) सोते समय बच्चेके मुँहमें स्तन नहीं रखना चाहिये। इससे दूध चारों तरफ बिखरकर स्तनमें और बच्चेके मुँहपर छाले पड़ जाते हैं।

(७) दूध पिलानेके पहले और पीछे स्तनोंको साफ जलसे धो डालना चाहिये, नहीं तो उनमें छाले पड़ जायँगे।

(८) क्रोध, उत्तेजना या शोकके समय स्तनपान नहीं कराना चाहिये। प्रेम, शान्ति, उत्साह, आनन्दके समयका स्तनपान बच्चेके लिये अमृत और क्रोध, उत्तेजना तथा शोकके समयका स्तनपान विष होता है। बड़े प्यारसे जैसे गौ बछड़ेको चाटती हुई स्तनपान कराती है, इसी तरह बच्चेके सिरपर हाथ फेरते हुए उसे स्तनपान कराना चाहिये।

(९) माता बीमार हो तो स्तनपान नहीं करवाना चाहिये, ऐसी अवस्थामें यदि कोई अपनी जातिकी अच्छी नीरोग, शान्त, सुशील, मझले कदकी धाय मिल जाय तब तो अच्छी बात है, नहीं तो गौका ताजा दूध, आधा पानी और थोड़ी-सी चीनी मिलाकर पहले बताये हुए नियमसे पिलाना चाहिये। दूध पिलाते समय हर बार गरम करना चाहिये। ज्यादा गरम और बिलकुल ठण्डा दूध नहीं पिलाना चाहिये। चीनी कम डालनी चाहिये, नहीं तो कृमि पड़ जायँगे और दूधमें आधा पानी जरूर मिलाना चाहिये। दूध काँच या मिट्टीके साफ बर्तनमें रखना चाहिये और उसको दूध डालनेके पहले और निकालनेके बाद धोकर साफ कर लेना चाहिये। बिलायती दूध पिलाना बहुत हानिकारक है।

(१०) लड़के-लड़कीके पालनमें भेदभाव नहीं रखना चाहिये। समान प्यारसे दोनोंका पालन-पोषण करना चाहिये।

(११) लड़कोंको दवाकी आदत नहीं डालनी चाहिये। सहसा जुलाब नहीं देना चाहिये, माँका स्वच्छ दूध ही उसका कोठा साफ करनेके लिये काफी है।

(१२) बच्चोंको केवल गोदमें ही न रखकर सर्दीसे बचाकर जमीनपर लेटने देना चाहिये।

(१३) बच्चोंके सामने माता-पिताको बुरी बातें या कुचेष्टाएँ कभी नहीं करनी चाहिये।।

(१४) बच्चोंके रखने और खेलानेके लिये अलग नौकर-नौकरानियाँ रखने पड़ें तो बहुत ही सच्चरित्र होने चाहिये, नहीं तो उनके संगसे बच्चोंके हृदयपर बुरे संस्कार पड़ जायँगे।

(१५) बच्चोंको गहने भूलकर भी नहीं पहनाने चाहिये। इससे बच्चोंके शरीर और चरित्र-गठनमें बड़ी बाधा पहुँचती है, जानकी जोखिम तो सदा बनी ही रहती है। तंग कपड़े नहीं पहनाने चाहिये, जहाँतक हो, बच्चोंको नंगे बदन रहनेकी आदत डालनी चाहिये।

बहिन सरला! अब साँझ होनेको आयी, तुम घर जाओ, आज यहींतक। फिर कभी मिलनेसे आगे और बातें भी हो सकती हैं। राम-राम!

सरला—बहिन! तुम्हारे इस उपकारका बदला मैं कभी नहीं चुका सकती। तुम-सरीखी बुद्धि हम सब स्त्रियोंकी हो जाय तो आज ही सब तरहसे सुख-शान्ति हो सकती है। मन तो नहीं करता, पर तुम्हारी आज्ञानुसार मैं अभी जाती हूँ। कृपा और प्रेम सदा इसी तरह बनाये रखना। अच्छा, राम-राम!

हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत्

॥ श्रीहरिः॥

परम श्रद्धेय श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार (भाईजी)-के अनमोल प्रकाशन

कोड	पुस्तक
820	भगवच्चर्चा (ग्रन्थाकार)
050	पदरत्नाकर
049	श्रीराधा-माधव-चिन्तन
058	अमृत-कण
332	ईश्वरकी सत्ता और महत्ता
333	सुख-शान्तिका मार्ग
343	मधुर
056	मानव-जीवनका लक्ष्य
331	सुखी बननेके उपाय
334	व्यवहार और परमार्थ
514	दुःखमें भगवत्कृपा
386	सत्संग-सुधा
342	संतवाणी—ढाई हजार अनमोल बोल
347	तुलसीदल
339	सत्संगके बिखरे मोती
349	भगवत्प्राप्ति एवं हिन्दू-संस्कृति
350	साधकोंका सहारा
351	भगवच्चर्चा
352	पूर्ण समर्पण
353	लोक-परलोक-सुधार
354	आनन्दका स्वरूप
355	महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
356	शान्ति कैसे मिले?
357	दुःख क्यों होते हैं ?
348	नैवेद्य
337	दाम्पत्य-जीवनका आदर्श
336	नारीशिक्षा
340	श्रीरामचिन्तन
338	श्रीभगवन्नाम-चिन्तन
345	भवरोगकी रामबाण दवा
346	सुखी बनो
341	प्रेमदर्शन
358	कल्याण-कुंज
359	भगवान्की पूजाके पुष्प
360	भगवान् सदा तुम्हारे साथ हैं
361	मानव-कल्याणके साधन
362	दिव्य सुखकी सरिता
363	सफलताके शिखरकी सीढ़ियाँ
364	परमार्थकी मन्दाकिनी
366	मानव-धर्म
526	महाभाव-कल्लोलिनी
367	दैनिक कल्याण-सूत्र
369	गोपीप्रेम

कोड	पुस्तक
368	प्रार्थना—प्रार्थना-पीयूष
370	श्रीभगवन्नाम
373	कल्याणकारी आचरण
374	साधन-पथ—सचित्र
375	वर्तमान शिक्षा
376	स्त्री-धर्म-प्रश्नोत्तरी
377	मनको वश करनेके कुछ उपाय
378	आनन्दकी लहरें
380	ब्रह्मचर्य
381	दीन-दु:खियोंके प्रति कर्तव्य
379	गोवध भारतका कलंक एवं गायका माहात्म्य
382	सिनेमा मनोरंजन या विनाशका साधन
344	उपनिषदोंके चौदह रत्न
371	राधा-माधव-रससुधा-(षोडशगीत) सटीक
384	विवाहमें दहेज—
809	दिव्य संदेश...........

गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित कुछ साधन-भजनकी पुस्तकें

कोड	पुस्तक
052	स्तोत्ररत्नावली—सानुवाद
819	श्रीविष्णुसहस्रनाम—शांकरभाष्य
207	रामस्तवराज—(सटीक)
211	आदित्यहृदयस्तोत्रम्
224	श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्र
231	रामरक्षास्तोत्रम्
1594	सहस्रनामस्तोत्रसंग्रह
715	महामन्त्रराजस्तोत्रम्
054	भजन-संग्रह
140	श्रीरामकृष्णलीला-भजनावली
142	चेतावनी-पद-संग्रह
144	भजनामृत—६७ भजनोंका संग्रह
1355	सचित्र-स्तुति-संग्रह
1214	मानस-स्तुति-संग्रह
1344	सचित्र-आरती-संग्रह
1591	आरती-संग्रह—मोटा टाइप
208	सीतारामभजन
221	हरेरामभजन—दो माला (गुटका)
576	विनय-पत्रिकाके पैंतीस पद
225	गजेन्द्रमोक्ष
1505	भीष्मस्तवराज
699	गंगालहरी
1094	हनुमानचालीसा—भावार्थसहित
228	शिवचालीसा
232	श्रीरामगीता
851	दुर्गाचालीसा
236	साधकदैनन्दिनी